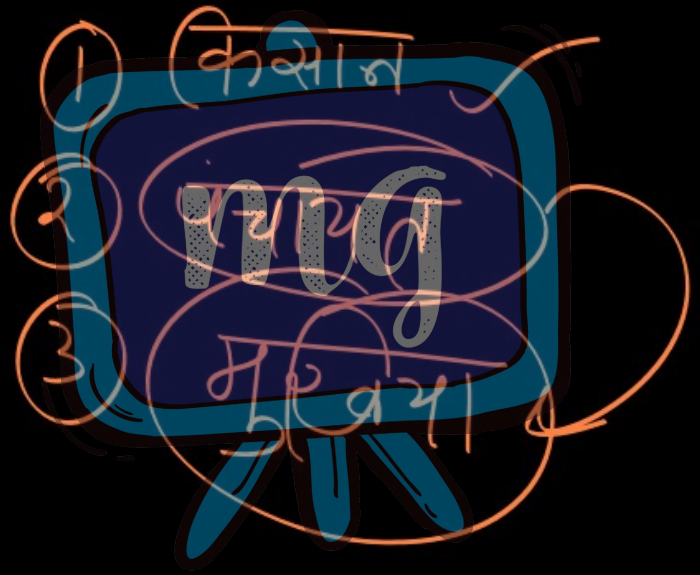

कक्षा - 12
भारतीय इतिहास के कुछ विषय
अध्याय - 8
किसान, ज़मींदार और राज्य
भाग - 3
प्रीतेश जोशी

किसान जमींदार राज्य



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पंचायतें और मुखिया

- गाँव की पंचायत में बुजुर्गों का जमावड़ा होता था। आमतौर पर वे गाँव के महत्त्वपूर्ण लोग हुआ करते थे जिनके पास अपनी संपत्ति के पुश्तैनी अधिकार होते थे।
- जिन गाँवों में कई जातियों के लोग रहते थे, वहाँ अकसर पंचायत में भी विविधता पाई जाती थी।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- फिर भी इसकी संभावना कम ही है कि छोटे-मोटे और "नीच" काम करने वाले खेतिहर मज़दूरों के लिए इसमें कोई जगह होती होगी।
- पंचायत का फ़ैसला गाँव में सबको मानना पड़ता था।
- पंचायत का सरदार एक मुखिया होता था जिसे मुक़द्दम या मंडल कहते थे।

ipca
A dose of life

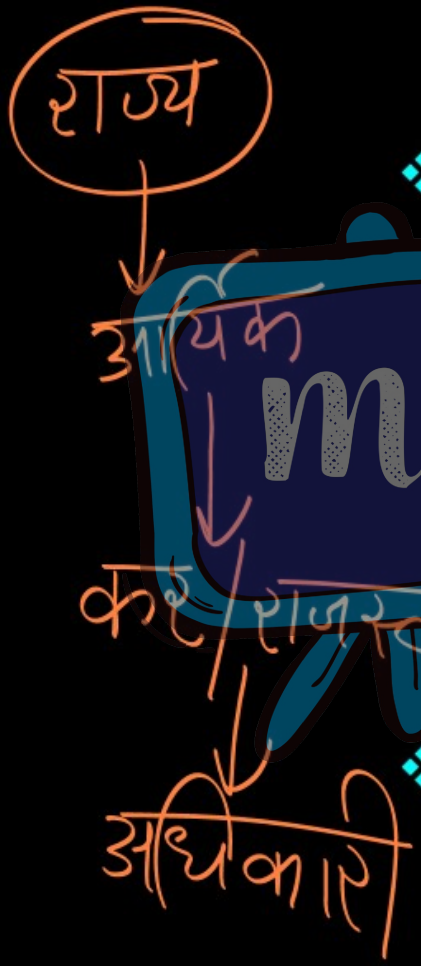
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ज़मींदारी

- कुछ स्रोतों से ऐसा लगता है कि मुखिया का चुनाव गाँव के बुज़ुर्गों की आम सहमति से होता था और इस चुनाव के बाद उन्हें इसकी मंज़ूरी ज़मींदार से लेनी पड़ती थी।
- गाँव के आमदनी व खर्चे का हिसाब-किताब अपनी निगरानी में बनवाना मुखिया का मुख्य काम था और इसमें पंचायत का पटवारी उसकी मदद करता था।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- पंचायत का खर्चा गाँव के उस आम ख़जाने से चलता था जिसमें हर व्यक्ति अपना योगदान देता था। इस ख़जाने से उन कर अधिकारियों की ख़ातिरदारी का ख़र्चा भी किया जाता था जो समय-समय पर गाँव का दौरा किया करते थे।
- इस कोष का इस्तेमाल बाढ़ जैसी प्राकृतिक विपदाओं से निपटने के लिए भी होता था और ऐसे सामुदायिक कार्यों के लिए भी जो

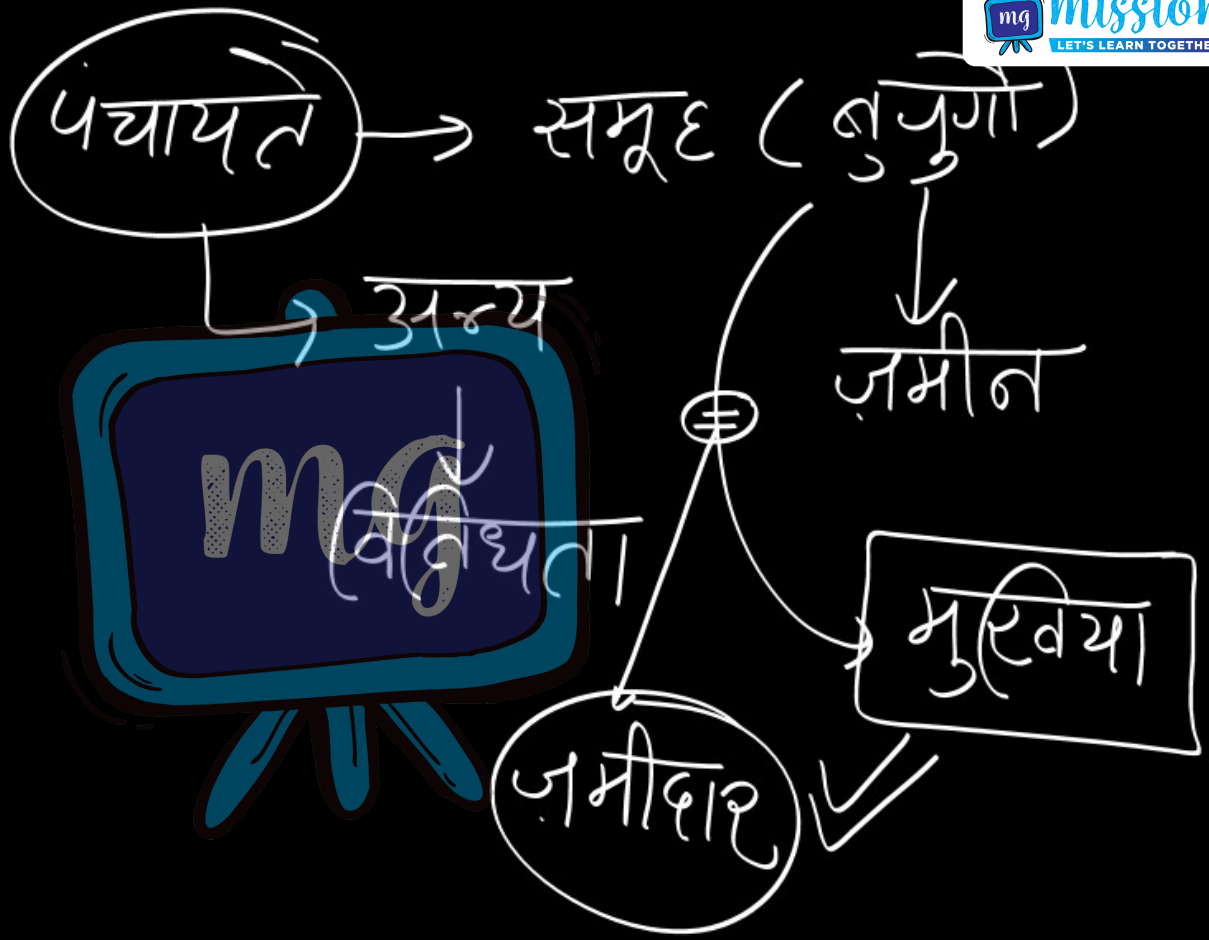
किसान खुद नहीं कर सकते थे, जैसे कि मिट्टी के छोटे-मोटे बाँध बनाना या नहर खोदना।

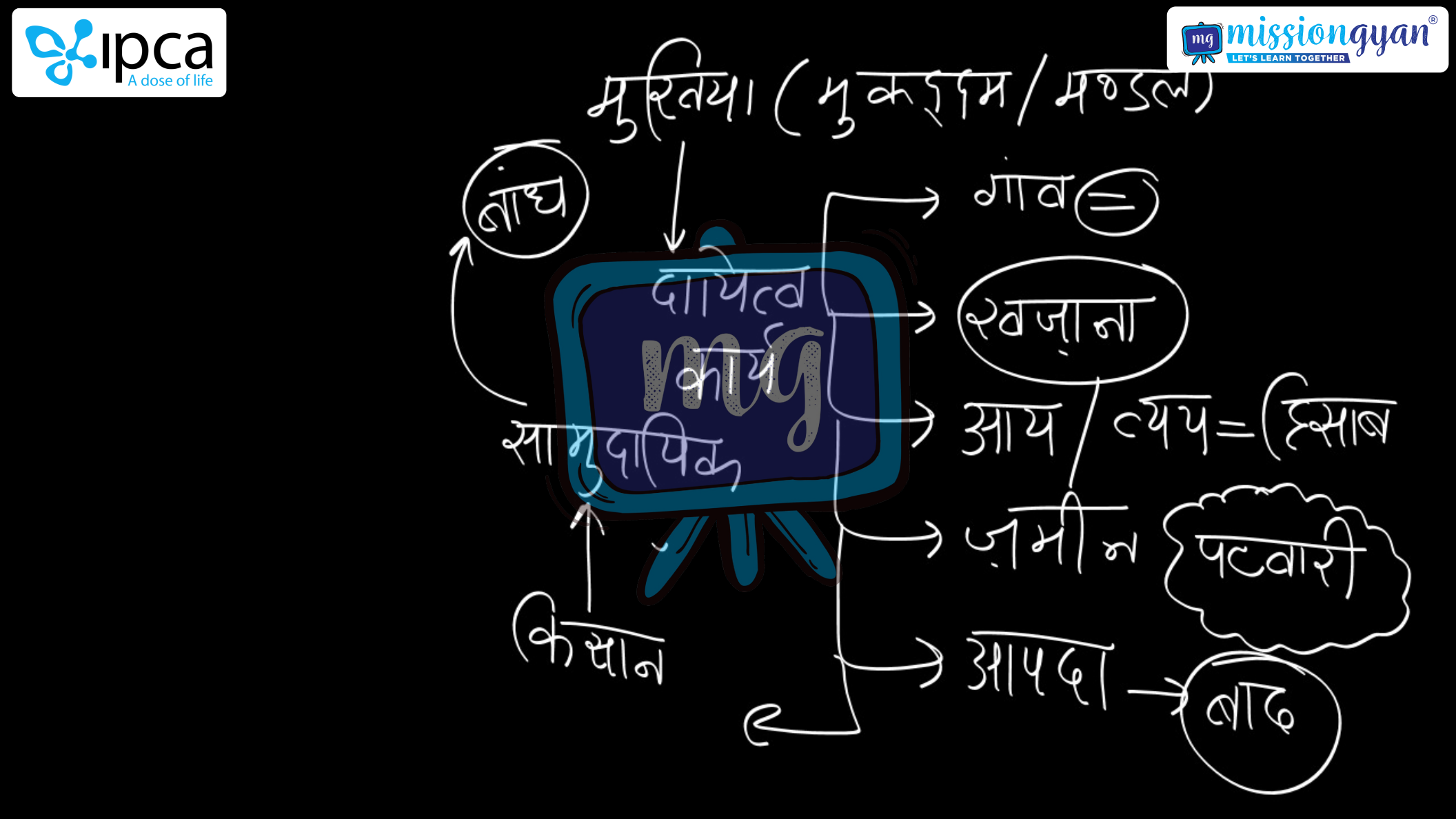
पंचायत का एक बड़ा काम यह तसल्ली करना था कि गाँव में रहने वाले अलग-अलग समुदायों के लोग अपनी जाति की हदों के अंदर रहें।

Q. मध्यकालीन राज्य में पंचायतें किस प्रकार कार्य करती थी?

Q. मुखिया का चुनाव किस प्रकार होता था और उनके दायित्व क्या थे?




पंचायत
समूह (बुजुर्ग)
अन्य
ज़मीन
(विविधता)
मुखिया
ज़मीदार


मुखिया (मुकद्दम/मण्डल)
बांध
दायित्व
कार्य
सामुदायिक
गांव
खज़ाना
आय / व्यय = हिसाब
ज़मीन
पटवारी
आपदा
बाढ़
किसान

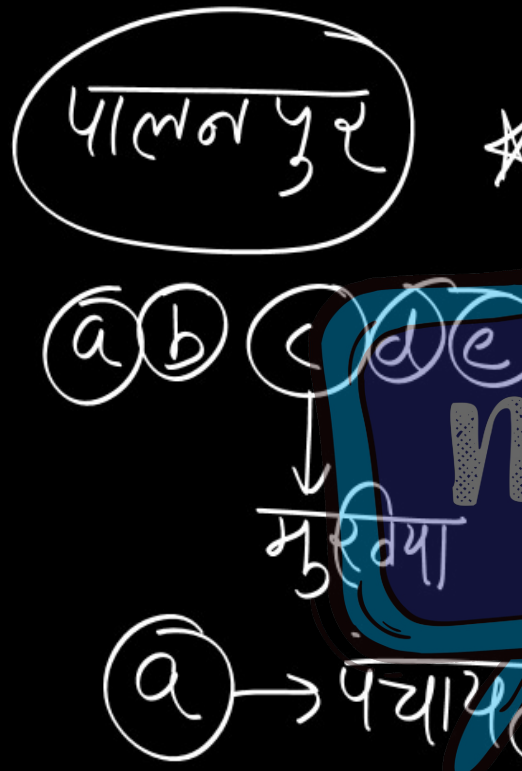
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यूँ कहा जा सकता है कि "जाति की अवहेलना रोकने के लिए" लोगों के आचरण पर नज़र रखना गाँव के मुखिया की ज़िम्मेदारियों में से एक था।
- पंचायतों को जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासित करने जैसे ज़्यादा गंभीर दंड देने के अधिकार थे।
- ऐसी नीतियों का मकसद जातिगत रिवाजों की अवहेलना रोकना था।

ipca
A dose of life

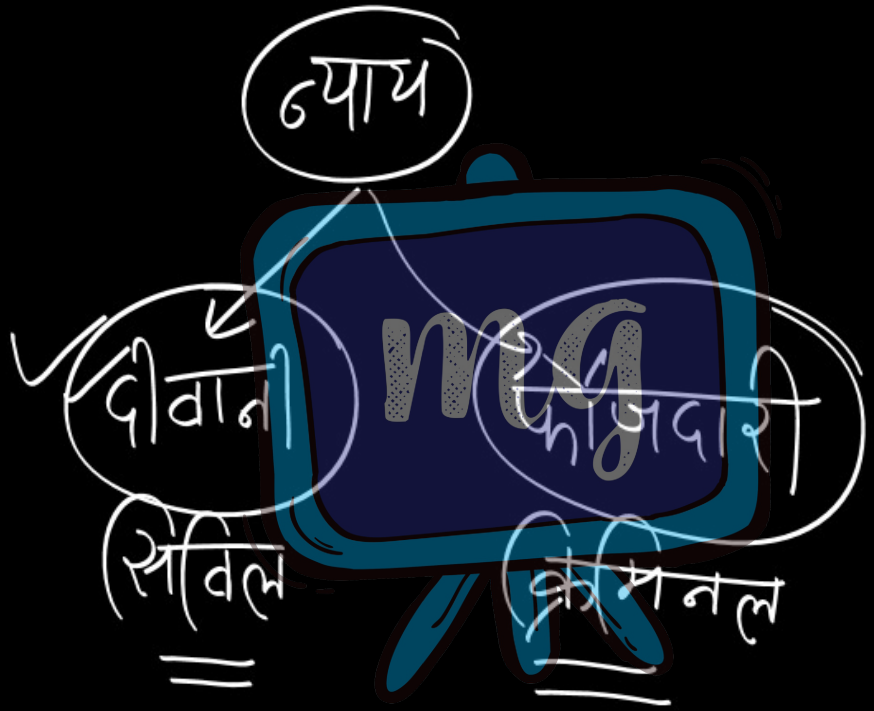
mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- ग्राम पंचायत के अलावा गाँव में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी।
- फ़ौजदारी न्याय को छोड़ दें तो ज़्यादातर मामलों में राज्य जाति पंचायत के फ़ैसलों को मानता था।
- संकलित दस्तावेज़ों में ऐसी कई अर्ज़ियाँ हैं जिनमें पंचायत से "ऊँची" जातियों या राज्य के अधिकारियों के ख़िलाफ़ ज़बरन कर उगाही या बेगार वसूली की शिकायत की गई है।

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- आमतौर पर यह अर्ज़ियाँ ग्रामीण समुदाय के सबसे निचले तबके के लोग लगाते थे।
- इनमें संभ्रांत समूहों की उन माँगों के ख़िलाफ़ अपना विरोध जताते थे जिन्हें वे नैतिक दृष्टि से अवैध मानते थे।
- उनमें एक थी बहुत ज़्यादा कर की माँग क्योंकि इससे किसानों का दैनिक गुज़ारा ही जोखिम में पड़ जाता था, ख़ासकर सूखे या ऐसी दूसरी विपदाओं के दौरान।

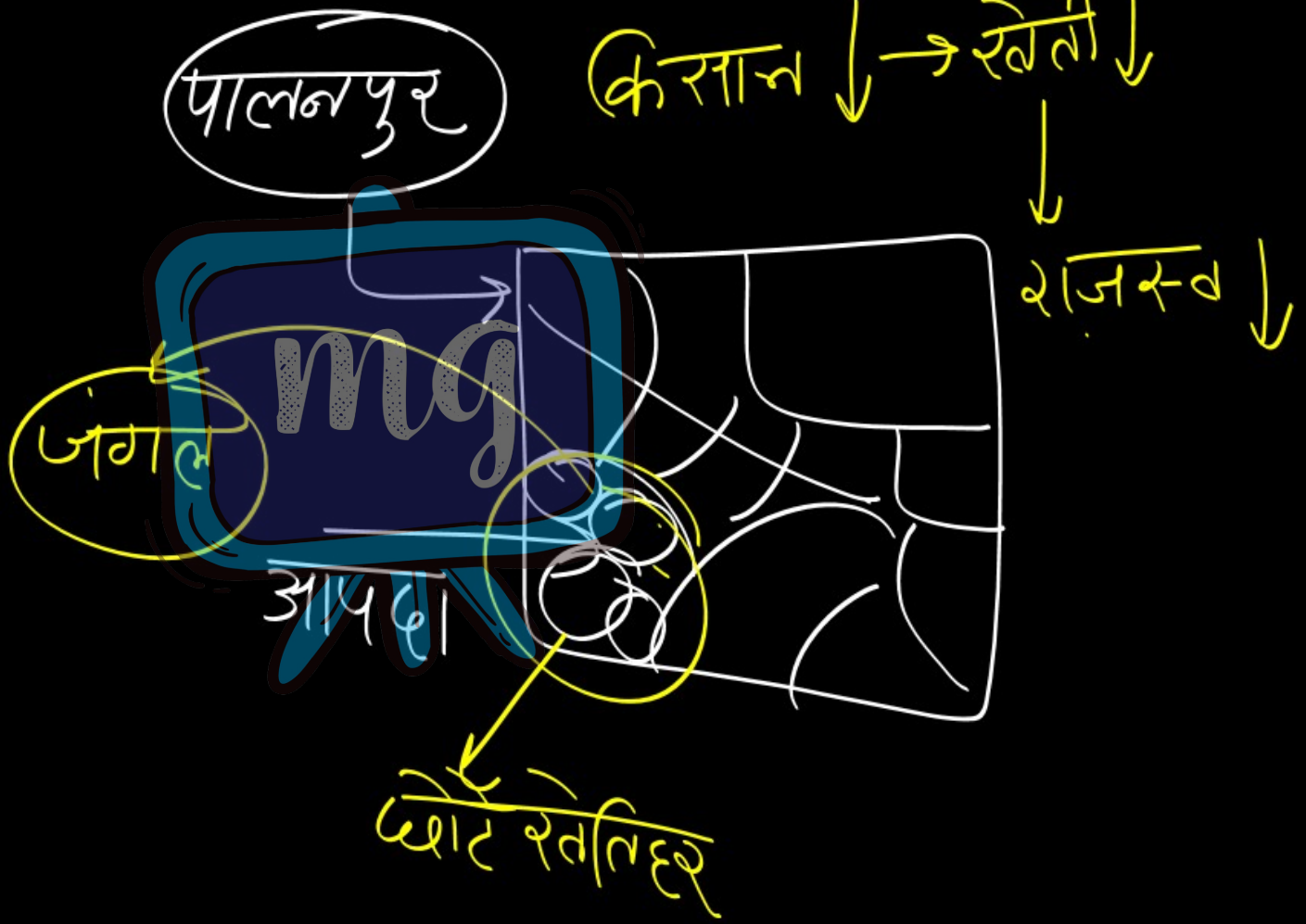
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- वे समझते थे कि ग्राम पंचायत को इसकी सुनवाई करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि राज्य अपना नैतिक फ़र्ज़ अदा करे और न्याय करे।
- "निचली जाति" के किसानों और राज्य के अधिकारियों या स्थानीय ज़मींदारों के बीच झगड़ों में पंचायत के फ़ैसले अलग-अलग मामलों में अलग-अलग हो सकते थे।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



अत्यधिक कर की माँगों के मामले में पंचायत अकसर समझौते का सुझाव देती थी।

जहाँ समझौते नहीं हो पाते थे, वहाँ किसान विरोध के ज़्यादा उग्र रास्ते अपनाते थे।

जैसे – गाँव छोड़कर भाग जाना।

जोतने लायक खाली ज़मीन अपेक्षाकृत आसानी से उपलब्ध थी जबकि श्रम को लेकर प्रतियोगिता थी। इस वजह से, गाँव छोड़कर भाग जाना खेतिहरों के हाथ में एक बड़ा प्रभावी हथियार था।

Q. वर्तमान समुदाय में जातिगत विषमताएँ, हमें किस प्रकार देखने को मिलती थी?



Q. भारतीय समुदाय की न्यायिक व्यवस्था पर एक लेख लिखें?



ग्रामीण दस्तकार

- अलग-अलग तरह के उत्पादन कार्य में जुटे लोगों के बीच फैले लेन-देन के रिश्ते गाँव का एक और रोचक पहलू था।
- गाँवों में दस्तकार काफ़ी अच्छी तादाद में रहते थे। कहीं-कहीं तो कुल घरों के 25 फ़ीसदी घर दस्तकारों के थे।

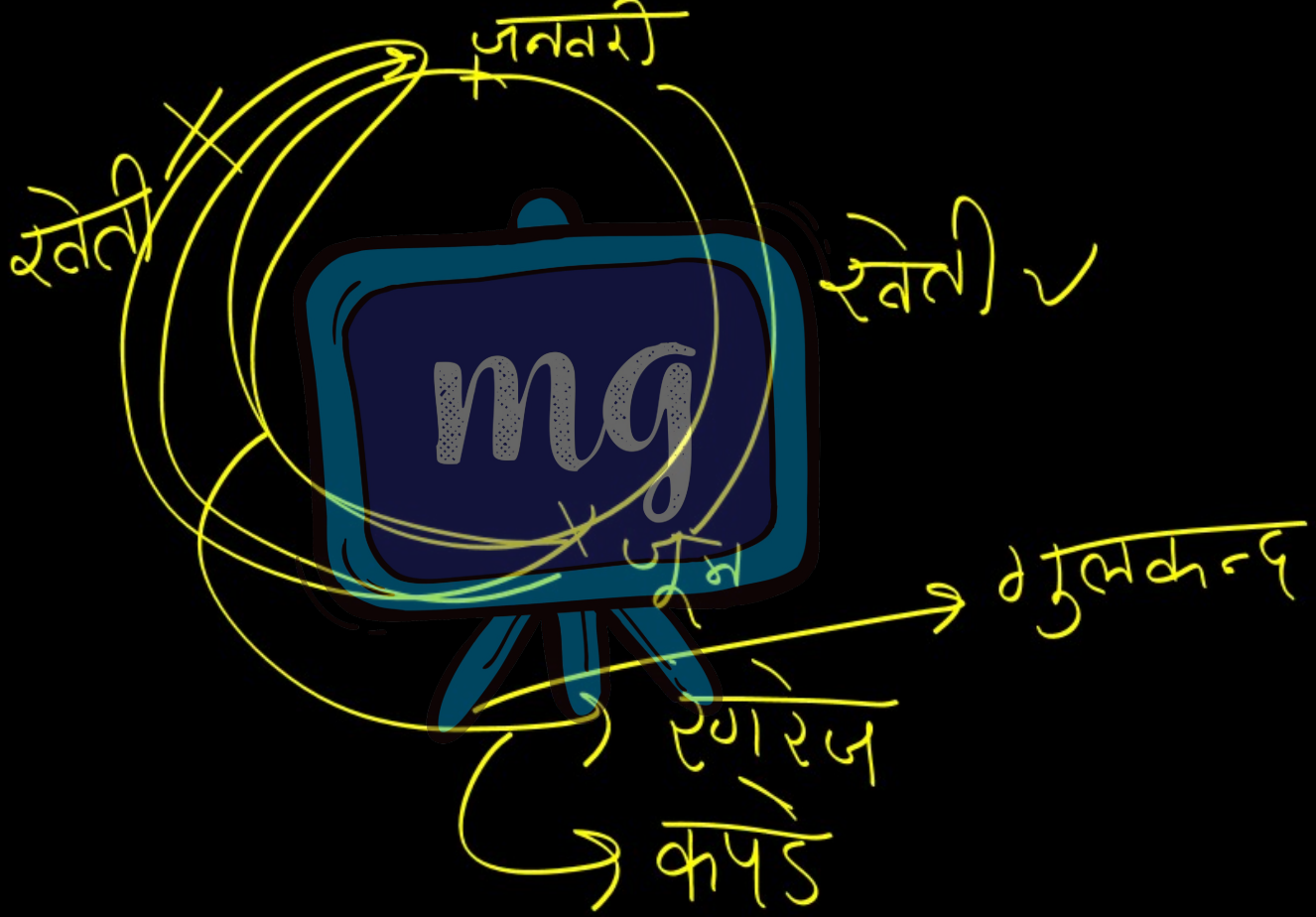
ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कभी-कभी किसानों और दस्ताकारों के बीच फ़र्क करना मुश्किल होता था क्योंकि कई ऐसे समूह थे जो दोनों किस्म के काम करते थे। रँगरेज़ी, कपड़े पर छपाई, मिट्टी के बरतनों को पकाना, खेती के औज़ारों को बनाना या उनकी मरम्मत करना। उन महीनों में जब उनके पास खेती के काम से फ़ुरसत होती।

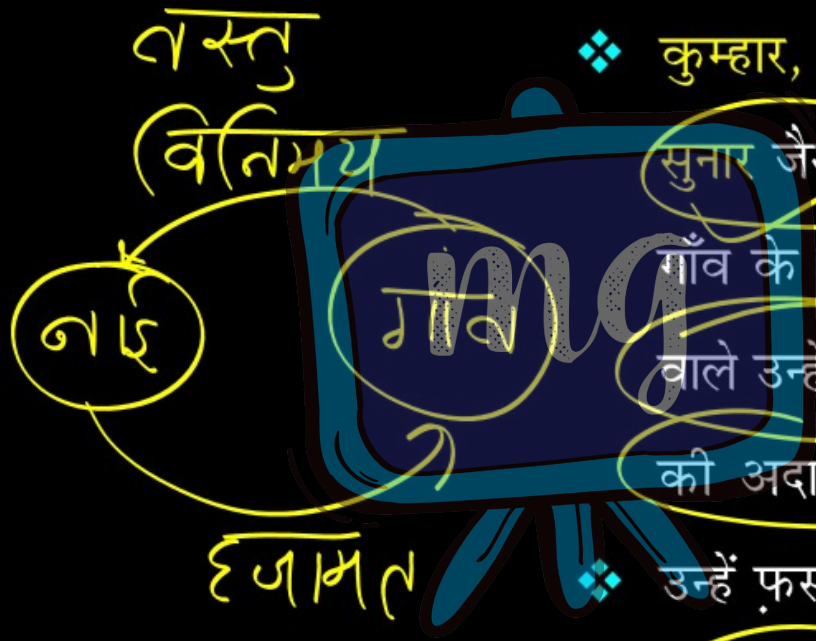
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- कुम्हार, लोहार, बढ़ई, नाई, यहाँ तक कि सुनार जैसे ग्रामीण दस्तकार भी अपनी सेवाएँ गाँव के लोगों को देते थे जिसके बदले गाँव वाले उन्हें अलग-अलग तरीक़ों से उन सेवाओं की अदायगी करते थे।
- उन्हें फ़सल का एक हिस्सा दे दिया जाता था या फिर गाँव की ज़मीन का एक टुकड़ा।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यही व्यवस्था कभी -कभी थोड़े बदले हुए रूप में भी पायी जाती थी जहाँ दस्तकार और हरेक खेतिहर परिवार परस्पर बातचीत करके अदायगी की किसी एक व्यवस्था पर राज़ी होते थे। ऐसे में आमतौर पर वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता था।

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

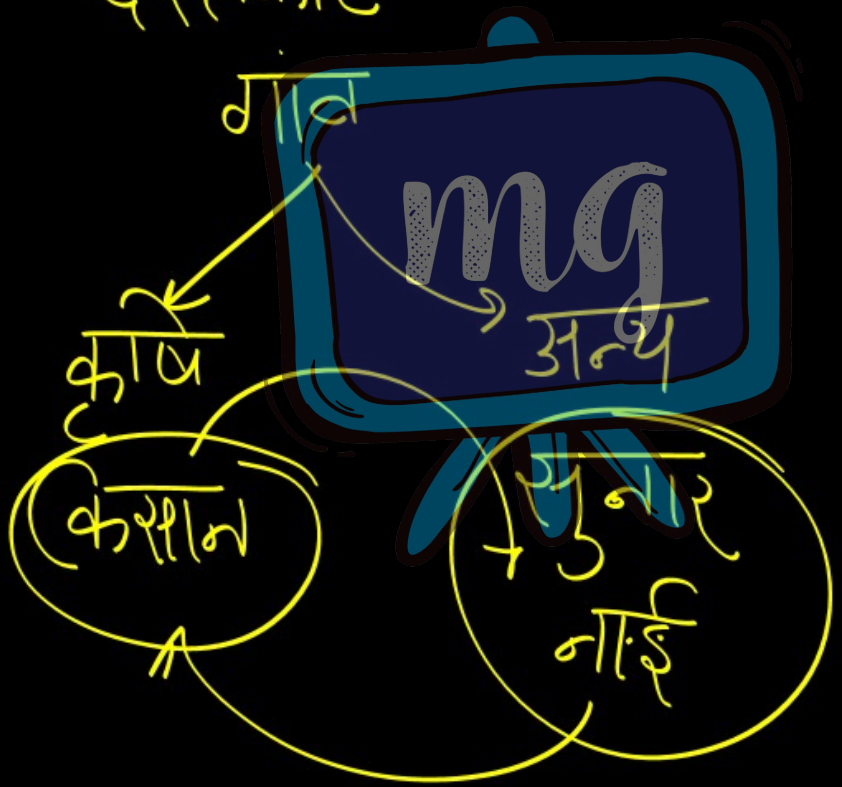
- उदाहरण के तौर पर, अठारहवीं सदी के स्त्रोत बताते हैं कि बंगाल में ज़मींदार उनकी सेवाओं के बदले लोहारों, बढ़ई और सुनारों तक को "रोज़ का भत्ता और खाने के लिए अनाज देते थे।" इस व्यवस्था को जजमानी कहते थे।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण
दस्तकार
गांव

बंगाल
↓
जजमानी



Q. जजमानी व्यवस्था क्या थी?